Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 1, January-2023, ISSN 2230-7540

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों की वर्तमान सन्दर्भ में उसकी प्रासंगिकता

सत्येन्द्र कुमार गौड[1*] डॉ. निर्मला राठौड[2]

[1] शोधार्थी, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर राज भारत

[2] शोध पर्यवेक्षक, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर राज भारत

***सार** - मनुष्य की अन्य प्राणियों से भिन्नता का आधार उसे प्राप्त प्रकृति का वरदान है "मनुष्य की जिज्ञासा" तथा अपने अनुभवों को सुरक्षित रखने तथा उसे अगली पीढ़ी तक पहुँचाने की क्षमता रखता हैं। जहाँ अन्य प्राणी नये सिरे से ज्ञार्नाजन करते हैं, वहाँ मनुष्य अपने ज्ञान को विस्तार देने हेतु अपने पूर्वजों के ज्ञान का सहारा लेकर निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ता जाता हैं। उसकी इस प्रगति का मूल कारण उसकी 'जिज्ञासा' हैं। वह सदैव अपने वातावरण को जिज्ञासा की दृष्टि से देखता हैं और निरन्तर पूर्व ज्ञान से आगे नवीन ज्ञान की ओर अग्रसर होता हैं। मनुष्य की उक्त प्रवृति जितनी अधिक अनुसंधान के क्षेत्र में सत्य प्रतीत होती है उतनी अन्य क्षेत्र में नहीं। संबंधित साहित्य का अध्ययन शोधकर्ता को नवीनतम ज्ञान के शिखरों पर ले जाता हैं, जहाँ उसे अपने क्षेत्र से संबंधित निष्कर्षो एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा यह ज्ञात होता हैं कि ज्ञान के क्षेत्र में कहाँ रिक्तियाँ हैं, निष्कर्ष-विरोध है, अनुसंधान चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, उसका लक्ष्य सम्बन्धित क्षेत्र में अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर खोजना, वर्तमान समस्याओं का समाधान खोजना, विरोधी सिद्धान्तों की सत्यता को परखना, नवीन प्रवृत्तियों एवं तथ्यों की खोज करना, जीवन एवं उसके परिवेश से संबंधित अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना आदि होता हैं। मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्र किए गए ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं - ज्ञान एकत्र करना, दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में वृद्धि करना। यह तथ्य शोध में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है जो वास्तविकता को समीप लाने के लिए निरंतर प्रयास करता रहता है। साहित्य का पूरा अवलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। बिना पुनरावलोकन किए अनुसंधानकत्र्ता दिशाहीन होता है। वस्तुतः साहित्य पुनरावलोकन एक कठोर परिश्रम का कार्य है।*

***कुंजी शब्द** - डॉ. राधाकृष्णन के षैक्षिक विचार, यथा षिक्षा का अर्थ, लक्ष्य, भाषा, षिक्षण माध्यम, षिक्षक पद्धति, पाठ्यक्रम आदि।*

----------X----------

प्रस्तावना

भारतीय विचारधारा के इतिहास में निःसन्देह थे बड़े महत्वपूर्ण क्षण। आन्तरिक कसौटी व अन्तदृष्टि के क्षण जन की आत्मा की पुकार पर मनुष्य जब एक नये युग में प्रवेश करता है और एक नये साहसिक कार्य पर चल पड़ता हैं। दर्शन के सत्य और जनसाधारण के दैनिक जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध ही धर्म को सजीव व वास्तविक बनाता हैं। जिसकी शिक्षा के क्षेत्र में मुख्य भूमिका होती हैं। कभी-कभी अत्यन्त प्राचीन भावनामयी कल्पनामयी कल्पनाएं अपने अद्भुत आधुनिक रूप के कारण आश्चर्य में डाल देती हैं। क्योंकि अन्तदृष्टि आधुनिकता के ऊपर निर्भर नहीं रहती हैं। भारतीय दर्शन व धर्मशास्त्र सर्वथा पृथक-पृथक नहीं हैं। पश्चिम में यह दोनो पृथक-पृथक हैं। डॉ. राधाकृष्णन् ने इन दोनों के मध्य पुल बनाने का प्रयास किया। वे दर्शन को आत्मविद्या कहते थे। भारतीय ऋष्यिों के समान वह भी मानते थे कि एक मात्र बुद्धि से ही सत्य ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता, प्रज्ञा से प्राप्त ज्ञान ही सच्चा ज्ञान हैं। वेदान्त की व्यवस्था उन्होंने नवीन ढंग से और मौलिक रूप में की जिससे उन्हें शंकर, रामानुज, माधवाचार्य और विवेकानन्द की श्रेणी में ला खड़ा किया। वे जिस धर्म व

www.ignited.in

तत्व ज्ञान का प्रचार करते थे, वह पूर्णतः आशावाद का व सतत् आगे बढ़ने की प्रेरणा का स्रोत हैं। डॉ. राधाकृष्णन् ने अपने 'Meditative outlook' में उस रहस्यमय विश्व की जिसको प्रत्यक्ष देखा नहीं जा सकता है- मैंने उस परम सत्ता का इस प्रकार बोध किया जिसके फलस्वरूप जीवन के कठिनतम् समय में भी उस परम सत्ता के प्रति उनका अडिग विश्वास रहा हैं। उन्होंने आगे चलकर अपने इस बोधित्व को भारतीय शिक्षा पद्धति में उड़ेल कर (भौतिक) व दैनिक दोनों सुविधाओं की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया। सन् 1931 में डॉ. राधाकृष्णन् को राष्ट्रसंघ अपनी अन्तर्राष्ट्रीय बौद्धिक संगठन का एक सदस्य नियुक्त किया गया। तत्कालीन युग की विशिष्ट चुनी हुयी प्रतिभाओं और विचारों से उनका परिचय हुआ। इससे शिक्षा के पुर्नगठन की समस्याओं को हल करने में भाग लेने का उनको दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की स्थापना के बाद उस समय सर्वथा नई थी। वस्तुतः यदि भविष्य को एक होना और विश्व मानव को उत्पन्न करना हो तो यह शिक्षा से ही संभव हैं। उनकी शिक्षा सन् 1948-49 शिक्षा कमीशन की रिपोर्ट में विश्वविद्यालय की शिक्षा के सभी पक्षों की विस्तृत एवं विधिवत् अध्ययन करने के पश्चात् उसको सशक्त बनाने के व्यवहारिक व रचनात्मक सुझाव दिये। भारत के लगभग सभी श्रेष्ठ शिक्षा मर्मज्ञों ने इन सुझावों में विश्वविद्यालयी शिक्षा के नवीन स्वरूप का संदेश पढ़ा। संभवतः यह कहना सत्य से दूर न होगा कि आज तक भारत में उच्च शिक्षा का निरीक्षण करने और सुझाव देने के विचार से जिन आयोगों एवं समितियों का आविर्भाव हुआ, उनमें विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का नाम ही सर्वप्रथम लिया जाता हैं। यदि उनके सुझावों एवं प्रस्तावों को ढंग से क्रियान्वित किया होता तो आज देश की उच्च शिक्षा की स्थिति कुछ और ही होती। इसी सन्दर्भ में कहा गया हैं -

डॉ. राधाकृष्णन् का भारतीय दर्शन के प्रचार और प्रसार में अद्वितीय योगदान रहा हैं। उनके दर्शन का शिक्षा पर भी प्रभाव पड़ा। अपने शिक्षा सम्बन्धी विचारों को उन्होंने 'सर्च फॉर ट्रुथ' नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया।

शिक्षा का अर्थ एवं लक्ष्य:- डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार मनुष्य का संकलित विकास करने की शक्ति ही शिक्षा हैं। शिक्षा का कार्य केवल बुद्धि का विकास करना ही नहीं होता अपितु मानव हृदय को ज्ञान और प्रज्ञान की महत्ता को समझाना हैं। डॉ.0 राधाकृष्णन् एक ऐसी शिक्षा के समर्थक हैं। डॉ.0 राधाकृष्णन् शिक्षा के लक्ष्य पर प्रकाश डालते हुए कहा हैं:- "जीवन का लक्ष्य सांसारिक आनन्द उठाना नहीं हैं बल्कि आत्मा को शिक्षित करना ही शिक्षा का लक्ष्य हैं।" शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य मनुष्य को आन्तरिक सत्य को जानने में सहायता देना हैं। वास्तविक शिक्षा तो मनुष्य की आन्तरिक प्रकृति पर आधारित होनी चाहिए। उसका लक्ष्य आत्म विकास हैं। राधाकृष्णन् के शब्दों में:- "शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य यह है कि मनुष्य चरित्र तालबद्ध होना चाहिए और उसकी आत्मा सृजनात्मक होनी चाहिए।" शिक्षा का लक्ष्य सब प्रकार की स्वतन्त्रता की ओर ले जाना हैं। उसका ध्येय केवल बाध्य योग्यता प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। शिक्षा के द्वारा व्यवहारिक सफलता का महत्व अवश्य है, किन्तु यही उसकी एक मात्र कसौटी नहीं हैं। राधाकृष्णन् ने शिक्षा का एक लक्ष्य नहीं माना बल्कि लक्ष्य के विषय में भी सर्वांगीण दृष्टिकोण रखा हैं। शिक्षा का सबसे प्रमुख लक्ष्य मनुष्य को ज्ञान देना हैं। उसको विद्वान बनाना हैं। ज्ञान के बगैर आध्यात्मिक विकास नहीं हो सकता । इसी ज्ञान के लिए विज्ञान, साहित्य, कला और दर्शन आदि की शिक्षा दी जाती हैं। परन्तु कोरा ज्ञान कुछ नहीं है, जब तक कि उसको आत्मसात् न कर लिया जाये। शिक्षा का लक्ष्य मानव आत्मा की स्वतन्त्रता हैं। राधाकृष्णन् मानववादी हैं। मानव आत्मा की स्वतन्त्रता सबसे अधिक मूल्यवान हैं। "यह आवश्यक है कि मानव आत्मा की स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखे जिसके बहुत से लाभ है, जिनसे संस्कृति की वृद्धि हुयी हैं। हमने आरम्भ से ही कहा कि मानव आत्मा की स्वतन्त्रता से अधिक बड़ा कुछ नहीं हैं और मानव आत्मा की प्राप्ति से अधिक कुछ नहीं।"किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके नर नारियों के चरित्र पर निर्भर हैं। चरित्र निर्माण का कार्य शिक्षा के द्वारा होता हैं। चरित्र से तात्पर्य नैतिक चरित्र से हैं। इसके बगैर व्यक्ति अथवा समाज किसी की भी प्रगति नहीं हो सकती।

डॉ. राधाकृष्णन् के शब्दों में:- चरित्र के द्वारा राष्ट्र के भाग्य का निर्माण होता हैं। जिस देश के निवासियों का चरित्र नीचा है, वह देश कभी भी महान नहीं हो सकता। यदि हम एक महान राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें अधिक संख्या में युवकों और युवतियों को इस प्रकार शिक्षित करना होगा कि उनमें चरित्र बल हो। हमारे पास ऐसे नर-नारी होने चाहिए जो दूसरों में अपनी झाँकी देखें, जैसा कि हमारे शास्त्रों में कहा गया है" डॉ. राधाकृष्णन् वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धान्त में विश्वास करते थे। उनके अनुसार संसार के सभी व्यक्ति एक ही परिवार के सदस्य हैं। इसलिए सभी को सबकी सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीयता को समान दृष्टि से देखने की आवश्यकता हैं। डॉ.राधाकृष्णन् शिक्षा के माध्यम से विश्व बन्धुत्व की भावना को मजबूत बनाने पर अधिक जोर देते हैं। एक

मात्र शिक्षा के द्वारा ही इस उद्देश्य की पूर्ति हो सकती हैं। अतः शिक्षा की रूपरेखा को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाये जिससे मनुष्य अपनी भौतिकवादी प्रवत्ति से दूर हटकर आध्यात्मिक मनोवृत्ति की ओर अग्रसर हो तथा मानव मात्र को अपना हितैषी और बंधु समझें। डॉ. राधाकृष्णन् नैतिकता को मनुष्य के सामाजिक बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास का आधार मानते हैं। नैतिकता एक विशेष गुण है तथा इसका प्रभाव मनुष्य के समस्त कार्यकलापों पर अत्यन्त ही सूक्ष्म और विलक्षण होता हैं। अतः डॉ. राधाकृष्णन् ने सामाजिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास के नैतिकता के संगठन और संवर्द्धन की शिक्षा पर जोर दिया हैं। सच्ची शिक्षा योजना के द्वारा ही इस लक्ष्य की पूर्ति होगी। प्राचीन काल में गुरूकुल में दी जाने वाली शिक्षा इसी उद्देश्य को प्रतिपादित एवं उपस्थित करती थी। अतः उस समय का समस्त जीवन और कार्य उच्च मर्यादा के अन्तर्गत था। अतः वर्तमान भारत का प्रत्येक शिक्षण संस्थाओं में "सरल जीवन और उच्च विचार" की पवित्र ओजस्विनी तथा जनहितकारी धारा प्रवाहित हो। प्राचीन उपनिषदों में अन्तर्दृष्टि को उच्चतम् शिक्षा कहा गया हैं। उससे सत् और असत् उचित और अनुचित का अन्तर किया जा सकता हैं। यह अन्तर्दृष्टि केवल पुस्तकों को पढ़ने से नहीं मिल सकती। इसके लिए योग्य शिक्षक के नेतृत्व की आवश्यकता हैं। इसलिए राधाकृष्णन् ने विद्यालयों में योग्य शिक्षकों की नियुक्ति पर सबसे अधिक जोर दिया।

शैक्षिक विचार:- डॉ. राधाकृष्णन् ने विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर विचार किया, उनकी बुराइयों को जाना और उनको दूर करने का उपाया बताया। परिवार लघुतम समूह हैं। समाज को यदि उन्नति करनी है तो परिवार की आवश्यकताएं दूर होनी चाहिए। उनका परिष्कार होना चाहिए। परिवार एक बड़ा प्रशिक्षण संस्था स्वरूप हैं। जो आज यांत्रिक सभ्यता, आद्योगीकरण, बढ़ते वैयक्तिवाद के आघातों से छिन्न-भिन्न होने लगे हैं।

शिक्षा का माध्यम प्रादेशिक भाषा:- डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार शिक्षा का माध्यम प्रादेशिक भाषा होना चाहिए। उनका स्वयं अंग्रेजी भाषा पर असाधारण अधिकार था किन्तु उन्होंने स्पष्ट लिखा हैं, "यह कभी भी गम्भीरता से नहीं सोचा जा सकता कि अंग्रेजी भारत की जन भाषा बन सकती हैं।" इसका कारण बताते हुए उन्होंने दिखलाया है कि भारतीय अंग्रेजी भाषा में महान साहित्य की रचना नहीं कर सकते और दूसरे उनमें मौलिकता कभी नहीं आ सकती। लगभग सभी समकालीन भारतीय शिक्षा दार्शनिकों ने मातृभाषा को ही शिक्षा का सही माध्यम माना हैं। बालक के लिए मातृभाषा के द्वारा शिक्षण सबसे अधिक स्वाभाविक शिक्षण हैं। राधाकृष्णन् ने लिखा है वर्तमान काल के शिक्षित वर्ग की अल्पज्ञता और उनमें परिपक्व करने की असीम योग्यता होते हुए भी मौलिकता का अभाव केवल दो भाषाओं में चिन्तन के कारण हैं।" प्रादेशिक भाषा के अतिरिक्त राधाकृष्णन् ने संस्कृत भाषा के अध्ययन पर भी जोर दिया है, क्योंकि भारतीय संस्कृति का भण्डार संस्कृत भाषा में ही मिलता हैं। वह भारत के धर्मग्रन्थों की मुख्य भाषा है और विशेष प्रकार की जीवन पद्धति की प्रेरणा देती हैं। राधाकृष्णन् का स्वयं संस्कृत भाषा पर व्यापक अधिकार हैं और उन्होंने प्राचीन दार्शनिक ग्रन्थों की नवीन व्याख्याएं उपस्थित की हैं। संस्कृत भाषा से ही देश की एकता को जीवित रखा जा सकता हैं। डॉ. राधाकृष्णन् प्रादेशिक भाषा और संस्कृत भाषा के अतिरिक्त एक अखिल भारतीय भाषा के रूप में हिन्दी के प्रचार का भी समर्थन करते हैं। उन्होंने लिखा है:- "बहुत से प्रान्तों ने त्रिभाषीय भाषा के नियम को स्वीकार किया हैं। यदि इसका उपयोग ठीक प्रकार से हुआ तो प्रत्येक विद्यार्थी को मातृभाषा, हिन्दी तथा अंग्रेजी पढ़नी होगी और इसके द्वारा तीनों भाषाओं में ही ज्ञान वृद्धि होगी, हमें ऐसा करने का प्रयत्न करना चाहिए।" फिर भी राधाकृष्णन् ने माना कि हर राज्य में स्थानीय भाषा का विकास किया जाना चाहिए, यद्यपि साथ ही साथ सब कहीं हिन्दी भाषा भी सिखाई जानी चाहिए। डॉ.0 राधाकृष्णन् के अनुसार भावनाओं की शिक्षा का एक मात्र ध्येय बोध और व्यवहार का सेतु निर्माण करना होना चाहिए। किन्तु इसका तात्पर्य विध्न डालना नहीं है अस्तु हिन्दी भाषा और नागरी लिपि की स्वाभाविक प्रगति होनी चाहिए, उसे कहीं भी बलपूर्वक लादा नहीं जाना चाहिए।

शिक्षा और विद्यालय:- परिवार के बाद महत्वपूर्ण स्थान शिक्षण संस्थानों का हैं। शिक्षा बुनियादी तौर पर एक सामाजिक समस्या हैं। और समाज विद्यालय को यह कत्तव्य सौंपता है कि वह युवकों का प्रशिक्षण तथा उनका पालना पोषण इस ढंग से करें कि समाज के जिस समूह से वे सम्बन्ध रखते हैं उसके जीवन में प्रभावतः ढंग से भाग ले सके। यह तो निश्चित है कि विद्यालयों में व्यक्ति को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। परन्तु बाहर से समाज की आवश्यकताओं, तकाजों और आदर्शों के प्रसंग और कुछ हद तक उसके नित्ति ही उसे प्रशिक्षित किया जाना चाहिए और समाज के यह तकाजे निरन्तर परिवर्तित होते रहते हैं। अतः यह आवश्यक है कि विश्वविद्यालय के बाहर के जीवन के साथ, विद्यालय के बाहर के जीवन के साथ विद्यालय का सजीव सम्बन्ध रहे और वह बदलते हुए गतिशील वातावरण हेतु बच्चों को शिक्षा प्रदान करे। डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य आत्मज्ञान देने का हैं। आज की आवश्यकता एक

www.ignited.in

प्रकार का आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने की हैं। यह पूर्ण मानव की आवश्यकता हैं।

शिक्षा और शिक्षण:- भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण संसार में शिक्षण को एक व्यवसाय माना गया है। मानव इतिहास की श्रेष्ठतम विभूतियों ने इसको अपनाया है, बुद्ध, ईसा, गाँधी, सुकरात, मुहम्मद साहब, कन्फ्यूशियस यह सभी सच्चे अर्थो में मानव जाति के शिक्षक थे। वर्तमान युग के शिक्षक भी इन महात्माओं के पद चिन्हों का अनुगमन करके स्वयं के राष्ट्र के लिए अधिक उज्जवल भविष्य का निर्माण कर सकते है। शिक्षक राधाकृष्णन् ने ऐतिहासिक दृष्टि से दर्शन से अध्ययन व अध्यापन की एक विषिष्ट शैली का आविष्कार किया। फलस्वरूप इनके व्याख्यान से उनकी विद्वतापूर्ण झलक सहज प्राप्त होती हैं। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया उनके प्रत्येक कृतित्व में उच्च श्रेणी के शिक्षा दर्शन की गुणवत्ता समाहित होती जनकल्याण हेतु उचित मार्ग बताया। उन्होंने स्वयं लिखा है कि भारत के शिक्षा शास्त्रियों में वे अनुभव के आधार पर भी न्यूनतम हैं।

शिक्षण पद्धति:- डॉ. राधाकृष्णन् ने शिक्षा में शिक्षण पद्धति या विधि को महत्व दिया हैं। डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार निरीक्षण, प्रयोगों और प्रकृति एवं समाज में सम्बन्ध स्थापित करना शिक्षण विधि का मुख्य भाग होना चाहिए। नैतिक मूल्यों का शिक्षण सैद्धान्तिक न होकर वास्तविक और जीवित होना चाहिए। मानव प्रकृति के अनुसार छात्र-छात्राओं को प्राचीन वैदिक काल की शिक्षा विधियों जैसे - श्रवण, मनन और निदिध्यासन के द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए। कार्य प्रधान प्रकृति वाले विद्यार्थियों को कार्य करके ही सिखाया जा सकता है, अतः खेल, क्रिया मनोरंजन इत्यादि माध्यमों से शिक्षा दी जानी चाहिए। डॉ. राधाकृष्णन् ने सर्वाधिक महत्व ज्ञान प्रधान प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों को दिया हैं। इस गुण से सम्पन्न विद्यार्थियों को शिक्षा देने के लिए प्राचीन काल की शिक्षणविधि, अनुमान विधि और शब्द विधि पर बल दिया हैं।

शिक्षा का पाठ्यक्रम:- डॉ. राधाकृष्णन् ने देश की आवश्यकताओं के अनुरूप सर्वांगीण शिक्षा का समर्थन किया हैं। आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुसार वे विद्वान और शिल्प की शिक्षा को आवश्यक मानते हैं। किन्तु कोरी वैज्ञानिक शिक्षा को पर्याप्त नहीं मानते, दूसरी ओर वे साहित्यिक शिक्षा पर अधिक जोर देना भी अनुचित समझते हैं। शिक्षा के पाठ्यक्रम में दर्शनशास्त्र, अंकगणित, समाजशास्त्र, धर्मशास्त्र, साहित्य सभी को स्थान दिया जाना चाहिए। क्योंकि इनमें प्रत्येक विषय का अपना-अपना महत्व है। अंकगणित के सभी प्रकार के अनुशासन में आवश्यकता पड़ती है और कृषि विज्ञान तथा औद्योगिक कलाएं व्यवसायिक सफलता और भौतिक समृद्धि में सहायक हैं। प्राथमिक विद्यालयों में बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम अधिक उपयुक्त हैं। डॉ. राधाकृष्णन् ने बुनियादी शिक्षा की प्रशंसा करते हुए लिखा है:- "यह विद्यार्थी का दैनिक जीवन से सम्पर्क कराती है। यह शारीरिक शिक्षा का महत्व समझाती है। इसलिए भौतिक शिक्षा ठीक प्रकार से होनी चाहिए।"माध्यमिक स्तर पर कालेजों का पाठ्यक्रम प्राथमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम को ही आगे बढ़ाने वाला होना चाहिए। विद्यालयों के पाठ्यक्रम देश की आवश्यकता के अनुरूप संशोधित किये जाने चाहिए क्योंकि शिक्षा का एक लक्ष्य राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न करना है। विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा का विवेचन करते हुए डॉ. राधाकृष्णन् ने अनुसंधान पर विशेष रूप से जोर दिया है। उनके विचार मौलिक है उनका कहना है कि शिक्षण संस्थानों में धर्म की शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए। उनके अनुसार धर्म कोई विशेष मत नहीं है वरन् सत्य का बोध है। उन्होने कहा है कि धर्म के बिना शिक्षा वैसे ही है जैसे आत्मा के बिना शरीर अर्थात् धर्म को वे संकुचित अर्थ में नहीं लेते वरन् धर्म से उनका अर्थ है - वह व्यवस्था जिससे मानव मात्र का कल्याण हो। दूसरों को कष्ट न पहुँचाना ही धर्म हैं।

शिक्षा और अनुशासन:- डॉ. राधाकृष्णन् ने उत्तरोत्तर बढ़ती अनुशासन हीनता की समस्या का समाधान करने हेतु नैतिक शिक्षा की आवश्यकता का अनुभव किया और उस पर बल दिया। अनुशासन हर देश और समाज के लिए सबसे अमूल्य निधि है। जिस प्रकार देश और समाज के मूल्यों में सामाजिक जीवन हेतु अनुशासन का मूल्य अधिक है, उसी प्रकार अनुशासन व्यक्ति के जीवन के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। वे मानस की मौलिक अच्छाई पर विश्वास करते थे और यह मानते थे कि स्वयं आदर्श प्रस्तुत कर माता-पिता, अभिभावक, शिक्षक एवं नेता, बालक को अनुशासन का पाठ सिखा सकते हैं। उसमें चरित्र के उन गुणों का विकास कर सकते हैं जिनसे वह स्वयं अपने को अनुशासित करना सीख जाता है। चरित्र को वे अनुशासन का मूल आधार मानते है।

नारी-शिक्षा के संबंध में विचार:- किसी व्यक्ति का शिक्षा दर्शन उसके जीवन दर्शन से बहुत गहराई से सम्बन्ध रखता हैं। पूर्व पृष्ठों में डॉ. राधाकृष्णन् जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया। जहाँ तक वर्तमान सन्दर्भो में डॉ. राधाकृष्णन् जी के शैक्षिक विचारों में स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता, उपयोगिता का प्रश्न है। उस पर दृष्टिपात करना आवश्यक

है। क्योंकि डॉ. राधाकृष्णन जी के स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में विचार वर्तमान स्त्री शिक्षा के प्रतिबिम्ब है। डॉ. राधाकृष्णन् जी की स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में विचार सामाजिक क्रान्ति और सामाजिक परिवर्तन का साधन थी। उन्होंने इस चिन्तन को केवल सैद्धान्तिक रूप में ही नहीं रखा बल्कि अपने जीवन काल में इसका प्रयोग भी किया। वास्तव में डॉ. राधाकृष्णन् जी जानते थे कि बिना मानसिक परिवर्तन के कोई सामाजिक परिवर्तन नहीं हो सकता। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी कहा गया है कि शिक्षा सामाजिक न्याय और सामाजिक समानता के लक्ष्य तक पहुँचने का साधन हैं। वर्तमान शिक्षा जगत में स्त्रियों की शिक्षा में कोई परिवर्तन या सुधार लाना है तो डॉ. राधाकृष्णन् जी के शैक्षिक विचारों पर चलकर और उसकों अपनाकर लाया जा सकता हैं। स्त्रियों की शिक्षा के विषय में डॉ. राधाकृष्णन् के विचार भारतीय दर्शन के उस प्राचीन आदर्श से प्रेरित हैं जिसमें माना गया है कि जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। लेकिन इसका तात्पर्य केवल इतना ही है कि जो कार्य पुरूषों द्वारा किया जा सकता है उसे वे भली प्रकार करें जो कार्य स्त्रियां कर सकती हैं उसे वह अच्छी तरह करें। जहाँ तक दोनों की नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति या व्यक्तित्व के विकास का सम्बन्ध कहीं भी लिंग से नहीं है। उनका कहना है कि "स्त्रियां मानव है और उस रूप में उन्हें अपने पूर्ण विकास के लिए शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर के पक्षधर हैं। उनकी अन्तनिहित क्षमताओं के विकास को उतना ही महत्वपूर्ण मानते हैं। जितना पुरूषों की। इस प्रकार स्त्रियों की शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण मानवीय हैं। स्त्रियों की शिक्षा के विषय में उनका यह दृष्टिकोण विकसित करने में गाँधी जी के विचारों और प्रयोगों से बड़ी सहायता मिली। उन्होंने यह भी देखा कि गाँधी जी प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों को आगे लाये और उन्हें अवसर देने में महत्वपूर्ण योगदान किया। स्त्रियों की शिक्षा के सन्दर्भ में डॉ. राधाकृष्णन् के विचार शरतीय दर्शन के उस प्राचीन आदर्श से प्रेरित है। उनका मानना था कि स्त्री और पुरूष दोनों की नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति या व्यक्तित्व के विकास का प्रश्न है, लिंग का प्रश्न नहीं उठना चाहिए। वर्तमान आधुनिक परिवेश में महिलाएं अपना नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास करने के लिए पूर्ण रूप से स्वतन्त्र है। महिलाओं को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा प्रदान की जा रही है। उन्हें पुरूषों के समान ही शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। डॉ. राधाकृष्णन् जी का मानना था कि स्त्रियां मानव है और उस रूप में उन्हें अपने पूर्ण विकास का उतना ही अधिकार है जितना कि पुरूषों को। आज महिलाएं भी पुरूषांे के बराबर हर क्षेत्र में कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य कर रही हैं। अभी तक जो क्षेत्र स्त्रियों के लिए वज्र्य माने जाते थे उन शाखाओं में भी स्त्रियों का पदार्पण हो चुका है। कुछ-कुछ क्षेत्र ऐसे रहें है जहा स्त्रियों ने पुरूषों से अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जैसे शान्ति स्थापना में या बच्चों के लालन-पालन में। वर्तमान आधुनिक परिवेश में महिलाएं शिशुओं के पालन पोषण व शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। बहुत से नर्सरी और प्री-विद्यालय में महिला शिक्षिकाएं शिक्षण कार्य कर रही हैं। क्योंकि महिलाएं बालकों के मनोविज्ञान को अच्छी प्रकार समझने में सक्षम होती है। डॉ. राधाकृष्णन् जी का मानना था कि स्त्रियों की शिक्षा के लिए केवल कानूनी प्रावधान ही पर्याप्त नहीं हैं, उनके लिए सामाजिक वातावरण बनाने की आवश्यकता है। महिला मण्डल जैसे संगठन आगे जाकर इस दिशा में कार्य करें। वर्तमान में इस प्रकार की अनेक संस्थाएं सरकार द्वारा संचालित की जा रही है प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, आॅगनबाड़ी कार्यक्रम। इन कार्यक्रमों के माध्यम से बड़ी संख्या में स्त्रियों को शिक्षित किया जा रहा है। ग्रामीण तथा पिछड़े क्षेत्रों में स्त्रियों की शिक्षा के विषय में जो कार्य किए गये उस पर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की है, लेकिन वे सन्तुष्ट नही दिखते। ग्रामीण तथा पिछड़े क्षेत्रों में स्त्रियों की शिक्षा की स्थिति अब भी दयनीय है, नही के बराबर है इसके लिए उनका सुझाव है कि विशेष कार्यक्रम बनाकर इस कमी को दूर किया जाना चाहिए। इन्हीं सब मुद्दों को ध्यान में रखकर भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा विश्व बैंक पोषित परियोजना सर्वशिक्षा अभियान द्वारा स्त्रियों की शिक्षा के लिए प्राथमिक तथा पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में मुफ्त गणवेश, पुस्तकें, तथा मध्यान्ह भोजन की समुचित व्यवस्था की जा रही है तथा उन्हें निःशुल्क शिक्षा की जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए नगरों को जाने वाली छात्राओं के लिए रेल संसाधनों में रेल मन्त्रालय द्वारा मुफ्त मासिक सीजन टिकट की सुविधा स्नातक तक ही छात्राओं को उपलब्ध करायी जा रही है। वर्तमान समय में भी डॉ. राधाकृष्णन् जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा दर्शन की आवश्यकता महसूस की जा रही है। संस्कृति की अमूल्य निधियों तथा उच्चतर मानवीय मूल्यों की रक्षा का जहाँ तक प्रश्न है, वे स्त्रियों को पुरूषों से अधिक महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। उदाहरण स्वरूप उनमें त्याग और आत्म बलिदान की भावना पुरूषों से अधिक बलवती होती हैं। किन्हीं-किन्हीं क्षेत्रों में वे पुरूषों से अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। जैसे शान्ति स्थापना में या बच्चों के पालना पोषण में। मगर यह तभी सम्भव है जब स्त्रियों को भी उचित शिक्षा दी जाए। स्त्रियों को उचित शिक्षा देने के लिए केवल कानूनी प्रावधान ही पर्याप्त नहीं हैं। उसके लिए सामाजिक

www.ignited.in

वातावरण बनाने की भी आवश्यकता है। महिला मण्डल जैसे संगठनों को भी आगे जाकर इस दिशा में कार्य करना चाहिए। यह बात भी उन्होंने कही कि स्त्रियों की शिक्षा की योजना बनाने में हमें विशेष ध्यान इस बात का रखना चाहिए कि शिक्षा द्वारा उनके उच्च गुणों को आँच न पहुँचे। स्त्रियों की शिक्षा के विषय में स्वतन्त्र भारत में जो कार्य किये गये हैं उन पर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की हैं, लेकिन वे उनसे सन्तुष्ट नहीं दिखते । बहुत से ग्रामीण तथा पिछड़े क्षेत्रों में स्त्रियों की शिक्षा की स्थिति अब भी दयनीय है, नहीं के बराबर है इसके लिए उनका सुझाव है कि विशेष कार्यक्रम बनाकर इस कमी को दूर किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

पाण्डेय, डॉ.. रामशकल विश्व के महान शिक्षा शास्त्री, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

शर्मा, रामनाथ भारतीय आगरा शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर,

चतुर्वेदी, डॉ.. राजेश्वर प्रसाद डॉ.. राधाकृष्णन दिल्ली एक जीवनी, विद्या प्रकासन,

अवस्थी, अमरेश्वर एवं रामकुमार आधुनिक भारतीय सामजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली (1961)

Corresponding Author

सत्येन्द्र कुमार गौड*

शोधार्थी, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर राज भारत